POSHAN Abhiyaan
PM's Overarching Scheme for Holistic Nourishment
सही पोषण - देश रोशन

सत्यमेव जयते

नए समाज की ओर

# बीमार नवजात शिशु की पहचान एवं रेफरल सेवा

17


महिला एवं बाल विकास मंत्रालय
भारत सरकार, 2018

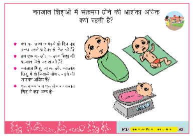

# नवजात शिशुओं में संक्रमण होने की आशंका अधिक क्यों रहती है?

कार्ड प्रदर्शित करें और कार्यकर्ताओं से प्रश्नों को एक–एक करके पढ़ने के लिये कहें। चर्चा होने दें।

याद करने की कोशिश करें कि नवजात शिशु के संक्रमणों की चपेट में आने की आशंका कब और क्यों अधिक रहती है?

कार्यकर्ताओं को सही जवाबों तक पहुँचने में सहायता के लिये दाहिनी ओर दिये गये बिन्दुओं का उपयोग करें। चर्चा के दौरान यह जानने की कोशिश करें कि क्या प्रत्येक कार्यकर्ता ने अपने–अपने गाँवों में कम–से–कम एक कमज़ोर नवजात शिशु की पहचान की है?

जीवन का पहला महीना ही ज़िन्दगी के लिए सबसे नाज़ुक समय होता है।

- नवजात शिशुओं के बीमारियों की चपेट में आने की आशंका सबसे अधिक रहती है क्योंकि उनके शरीर ने संक्रमणों से लड़ना अभी सीखा नहीं होता है। नौ माह तक माँ के पेट की सुरक्षा में रहने के बाद, शिशु एकदम से ऐसी दुनियाँ में आ जाता है जो स्वच्छ नहीं है, जहाँ कीटाणु हैं और जो माँ के गर्भ की तरह सुरक्षित नहीं है।
- ऐसे नवजात शिशु जिनका वज़न जन्म के समय कम होता है, या जो समय से पूर्व पैदा हो जाते हैं, उन्हें संक्रमण लगने की आशंका अधिक रहती है क्योंकि उनका शरीर एक स्वस्थ नवजात शिशु की तुलना में कमज़ोर होता है।
- जन्म के बाद नवजात शिशुओं के लिए सबसे बड़ी सुरक्षा उनकी माँ का दूध है। माँ के दूध में ऐसे तत्व हैं जो नवजात शिशु को कीटाणुओं से लड़ने की क्षमता देते हैं।
- 2 किलोग्राम से कम वज़न वाले अधिकतर कमज़ोर नवजात शिशुओं में ज्यादा बल और ऊर्जा नहीं होती है और वे अपने जीवन के शुरूआती कुछ दिनों में स्तनपान नहीं कर पाते हैं। ऐसे शिशुओं को कप या चम्मच से दूध पिलाने के दौरान साफ–सफाई का ध्यान न रखने से संक्रमण होने की अधिक संभावना रहती है। इससे नवजात शिशुओं में बहुत गंभीर बीमारियाँ हो सकती हैं। इसलिए कमज़ोर नवजात शिशुओं की अतिरिक्त देखभाल बहुत ही आवश्यक है।

**एक कमजोर और एक बीमार नवजात शिशु में क्या अंतर है?**

हमने पहले सीखा है कि जो शिशु जन्म के तुरन्त बाद आवश्यक ऊर्जा के साथ स्तनपान नहीं कर पाता है या जिसका वजन 2 किलोग्राम से नीचे है या उसका जन्म 8.5 महीने अथवा 37 सप्ताह पूरे करने से पहले हो जाता है, वह एक कमज़ोर नवजात शिशु होता है। जबकि, जो शिशु पहले तो ठीक तरह से स्तनपान कर रहा था किन्तु अब स्तनपान में कम रुचि ले रहा है और जिसकी सक्रियता भी कम हो गई है वह शिशु बीमारी के लक्षण दिखा रहा है।

कमज़ोर और बीमार शिशु में अंतर को समझना आवश्यक है क्योंकि कमज़ोर नवजात शिशु की देखभाल घर पर सम्भव है किन्तु बीमार शिशु को तुरन्त अस्पताल रेफर किया जाना चाहिये। जन्म के बाद शिशु किसी भी समय बीमार पड़ सकते हैं। ऐसा देखा गया है कि जन्म के पहले दो दिन तक शिशु बीमार नहीं पड़ता, परन्तु उसके बाद खासतौर पर पहले महीने में इसकी बीमार पड़ने की संभावना ज्यादा रहती है। हम इस मॉड्यूल में बीमार नवजात शिशु के बारे में और सीखेंगे।

# नवजात शिशुओं में संक्रमण होने की आशंका अधिक क्यों रहती है?

- क्या हम जन्म के पहले ही दिन गृह भ्रमण करके परिवार से मिल रहे हैं?
- हम एक कमज़ोर नवजात शिशु की पहचान कैसे कर सकते हैं?
- नवजात शिशु एवं कमज़ोर नवजात शिशु में से किसके बीमार पड़ने की आशंका अधिक है?
- एक कमज़ोर व एक बीमार नवजात शिशु में क्या अंतर है?

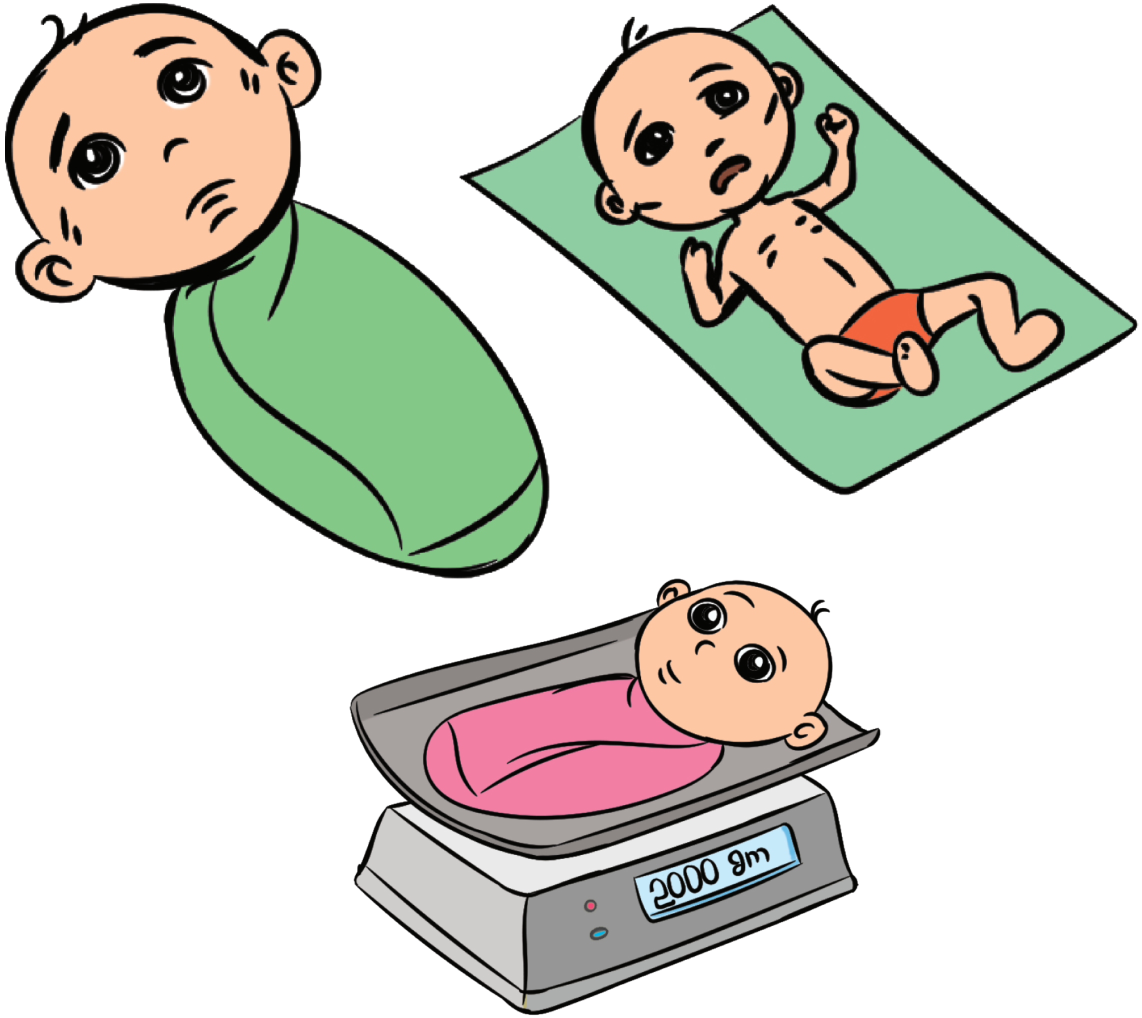

# नवजात शिशुओं को संक्रमण से बचाने के लिये क्या करना चाहिये?

हमने नवजात शिशु की आवश्यक देखभाल के बारे में सीखा था। आईये, एक बार याद करें कि नवजात शिशु की देखभाल का हर एक पहलू क्यों महत्त्वपूर्ण है?

कार्ड प्रदर्शित करें। कार्यकर्ताओं से प्रत्येक बिन्दु को पढ़ने के लिये कहें, उन्हें जवाब देने के लिये कुछ समय दें। चर्चा को आगे बढ़ाने के लिये दाहिनी ओर दिये गये बिन्दुओं को उपयोग करें।

नवजात शिशु की देखभाल सुनिश्चित करें;

कार्यकर्ताओं को याद दिलायें कि हमने गर्भावस्था की अन्तिम तिमाही में दो बार गृह भ्रमण करने और जन्म के पहले ही दिन नवजात शिशु की देखभाल सुनिश्चित करने के लिये एक और दौरा करने पर चर्चा की थी।

कार्यकर्ताओं से पूछें कि क्या वे गृह भ्रमण कर रही हैं?

**नवजात शिशु की देखभाल के प्रमुख पहलू:**

शिशु के जन्म के तुरंत बाद (जब वह रोने लगे), उसे संक्रमणों से बचाने के लिए तीन मुख्य काम हैं– केवल स्तनपान, गरमाहट, गर्भनाल की देखभाल और जीवाणुरहित व स्वच्छ वातावरण। जहाँ स्तनपान और गरमाहट नवजात शिशुओं की संक्रमणों से सुरक्षा करेंगे, वहीं गर्भनाल की देखभाल और जीवाणुरहित व स्वच्छ वातावरण संक्रमणों से शिशुओं का बचाव करने में मददगार साबित होंगे। आइये इनके बारे में और जानें।

- **समय पर और केवल स्तनपान करवाना:** स्तनपान संक्रमणों से शिशु की सुरक्षा करता है, और जिस शिशु को जितनी जल्दी स्तनपान कराना शुरू कर दिया जाता है उसे उतनी ही जल्दी यह सुरक्षा प्राप्त हो जाती है। जिन शिशुओं को जन्म के बाद जल्दी ही स्तनपान करा दिया जाता है उन्हें बाद में भी केवल स्तनपान कराये जाने की सम्भावना बढ़ जाती है, तथा देखभाल करने वाले लोग शिशु को अन्य हानिकारक पेय देने से बचते हैं जिससे संक्रमणों की आशंका भी कम हो जाती है।

- **शिशु को गरमाहट सुनिश्चित करना:** यह वह समय है जबकि शिशु के लिये पर्याप्त गरमाहट का इन्तज़ाम नहीं होने पर उसके ठण्डे पड़ जाने की आशंका सबसे अधिक होती है और वह सहज ही संक्रमणों की चपेट में आ सकता है। शिशु को देर से नहलाना, माता की त्वचा से शिशु की त्वचा का सम्पर्क रखना (के.एम.सी.) और शिशु को स्वच्छ कपड़े से अच्छी तरह लपेटकर उसे ठण्ड लगने से बचाया जा सकता है।

- **शिशु और विशेषकर गर्भनाल की स्वच्छ देखभाल सुनिश्चित करना:** गर्भनाल को बाँधने के लिये चिमटी या धागा का जीवाणुरहित नहीं होना और गर्भनाल को काटने के लिये ऐसी ब्लेड या कैंची का इस्तेमाल करना जिसे जीवाणुरहित नहीं किया गया हो, शिशु में संक्रमण का कारण बन सकते हैं। इसी प्रकार, मैले पदार्थ जैसे कि गोबर को गर्भनाल या नाभि पर लगाने से शिशु को गंभीर संक्रमण हो सकते हैं, जो कि उसकी मृत्यु का कारण भी बन सकते हैं। गर्भनाल को काटने के बाद शिशु की नाभि पर शेष बचे ठूँठ पर कुछ भी नहीं लगाना चाहिये। इसी प्रकार, गर्भनाल पर व नाभि पर भी कुछ नहीं लगाना चाहिये जब तक कि वह सूख नहीं जाये।

  **हाथों को धोना** शिशुओं को संक्रमणों से बचाने का सबसे असरदार तरीका है। जो कोई भी शिशु को छूने वाला हो, उसे पहले साबुन व पानी से अपने हाथ धोने चाहियें। हमने हाथ धोने का जो सही तरीका सीखा था उसे याद करें।

जन्म के समय नवजात शिशु की देखभाल सुनिश्चित करने से ऐसे शिशुओं की पहचान की जा सकती है, जिन्हें और अधिक देखभाल की आवश्यकता है। ऐसे शिशु जिनका जन्म प्रसव की संभावित तिथि से पहले हो जाता है अथवा जो शिशु जन्म के समय कम वज़न के होते हैं, उनमें संक्रमण की संभावना अधिक रहती है तथा ऐसे शिशुओं को विशेष देखभाल की आवश्यकता होती है।

# नवजात शिशुओं को संक्रमण से बचाने के लिये क्या करना चाहिये?

संक्रमणों से सुरक्षा के लिये:

- केवल स्तनपान
- गरमाहट

संक्रमणों से बचाव के लिये:

- गर्भनाल की देखभाल, शिशु के आस–पास जीवाणुरहित एवं स्वच्छ वातावरण

जन्म के समय नवजात शिशु की तुरन्त देखभाल के लिये हमने क्या तय किया था?

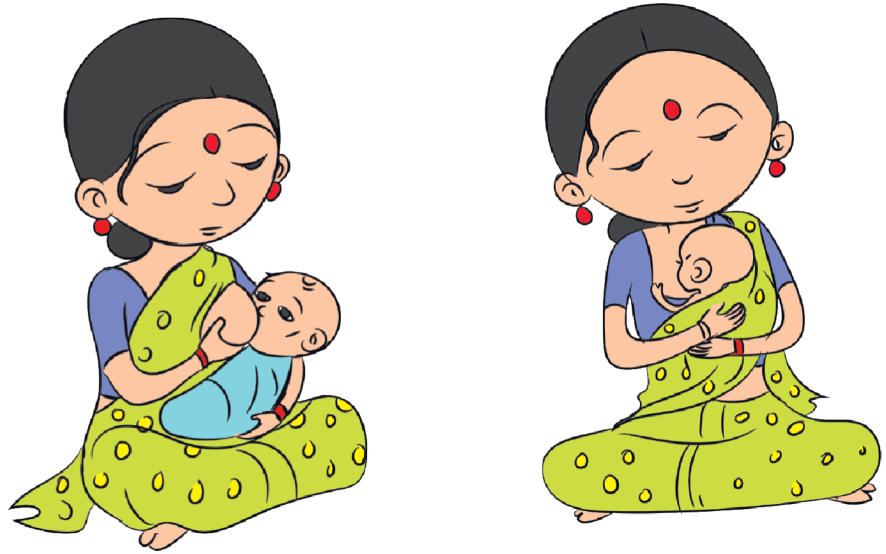

# संक्रमण के स्रोत

हमने सीखा है कि हम नवजात शिशुओं की संक्रमणों से सुरक्षा और बचाव कैसे कर सकते हैं। **आईये, अब समझें कि संक्रमण कहाँ से आता है?**

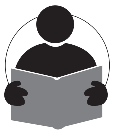

**कार्ड प्रदर्शित करें और कार्यकर्ताओं से प्रत्येक प्रश्न को पढ़ने के लिये कहें।**

**कार्यकर्ताओं का ध्यान चित्रों की ओर दिलायें। उन्हें पिछले मॉड्यूल में हुई चर्चा की याद दिलायें और संक्रमण कैसे फैलता है इस बारे में दाहिनी ओर दिये गये बिन्दुओं की सहायता से समझाएं।**

**कार्यकर्ताओं को बतायें:**
आज हम सीखेंगे कि विशेषकर नवजात शिशुओं में संक्रमण कैसे फैलता है। कार्यकर्ताओं से पूछें:

- संक्रमण कहाँ से आता है?
- गर्भनाल पर क्या लगाना चाहिये?
- गर्भनाल पर क्या नहीं लगाना चाहिये?

**कार्यकर्ताओं को जवाब देने के लिये प्रोत्साहित करें। दाहिनी ओर दिये गये बिन्दुओं का उपयोग करते हुए यह समझ बनाने में मदद करें कि संक्रमण शरीर में कैसे प्रवेश करता है।**

- कीटाणु सैंकड़ों–हज़ारों तरह के होते हैं– ये बहुत ही सूक्ष्म जीव हैं जिन्हें हमारी आँखें देख नहीं पाती हैं। ये सब जगह मौजूद होते हैं, इनमें से कुछ हवा में, पानी में, बिस्तर पर, किसी भी सतह पर, हमारी त्वचा पर, मुँह में, कपड़ों में, शरीर से निकलने वाले तरल द्रव्य में मौजूद रहते हैं।
- इनमें से कुछ सूक्ष्मजीव हमें नुकसान नहीं पहुँचाते हैं किन्तु करीब 100 प्रकार के अन्य ऐसे सूक्ष्मजीव हैं जिनके कारण बुख़ार, दस्त, सर्दी व खाँसी–ज़ुकाम जैसे संक्रमण होते हैं। कुछ सूक्ष्मजीवों के कारण इनसे भी अधिक हानिकारक संक्रमण हो सकते हैं, जैसे कि टेटनस।
- इनमें से कुछ सूक्ष्मजीव हमारे शरीर में भोजन व पेयजल के ज़रिए प्रवेश करते हैं, या उस हवा के ज़रिए जिसमें हम साँस लेते हैं। किन्तु इनमें से कई सूक्ष्मजीव हमारे हाथों के साफ नहीं होने के कारण शरीर में प्रवेश करते हैं।
- नवजात शिशुओं के मामले में, प्रसव, जन्म और जन्म के तुरन्त बाद का वक़्त संक्रमणों के प्रसार के लिए सबसे जोखिम भरे समय होते हैं। इस दौरान शिशु निम्नलिखित प्रकार से संक्रमित हो सकते हैं:
  - गर्भनाल को बाँधने के लिये जीवाणुरहित किये बिना इस्तेमाल किये जाने वाले पकड़ या धागे से।
  - गर्भनाल को काटने के लिये जीवाणुरहित किये बिना इस्तेमाल की जाने वाली ब्लेड या कैंची या अन्य उपकरणों से।
  - गर्भनाल या नाभि पर कुछ भी–शहद, घी, हल्दी, दवा, पाउडर– और विशेषकर हानिकारक पदार्थ जैसे कि गोबर व गौमूत्र लगाने से। ऐसे कुछ भी पदार्थ लगाने से शिशु को गंभीर संक्रमण हो सकते हैं और उसकी जान भी जा सकती है।
  - गर्भनाल या नाभि को गन्दे कपड़े से पोंछने से।
  - प्रसव के समय व घर पर अस्वच्छ वातावरण से।
  - शिशु को साफ करते समय, स्तनपान करते समय या कपड़े बदलवाते समय अस्वच्छ हाथों से छूने से।
  - जो लोग सर्दी, खाँसी, ज़ुकाम, बुख़ार, चर्मरोग आदि संक्रमणों से पीड़ित हैं वे भी नवजात शिशुओं को संक्रमित कर सकते हैं।
  - स्तनपान के अलावा अन्य भोजन व पेय देने से शिशु को नुकसान हो सकता है क्योंकि ऐसे पेय व भोजन पानी, बोतल व बर्तनों के माध्यम से कीटाणुग्रस्त हो सकते हैं।

# संक्रमण के स्रोत

- यह संक्रमण कहाँ से आते हैं?
- नवजात शिशुओं के शरीर में संक्रमण कहाँ से और कैसे प्रवेश करता है?

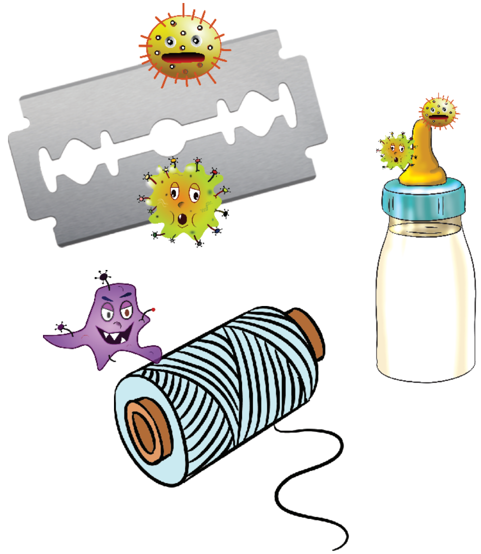

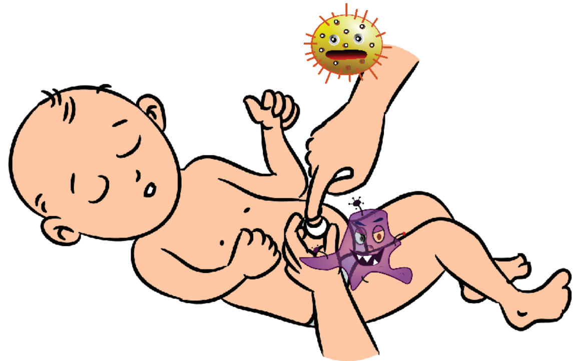

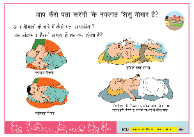

# आप कैसे पता करेंगी कि नवजात शिशु बीमार है?

हमने कमज़ोर नवजात शिशुओं के बारे में बात की, अब हम बीमार नवजात शिशुओं के बारे में बात करेंगे।

कार्ड प्रदर्शित करें और पहला प्रश्न पूछें। दाहिनी ओर दिये गये बिन्दुओं का उपयोग करके बीमारी के शुरूआती लक्षणों के बारे में समझायें।

अब दूसरा प्रश्न पूछें और चित्रों की ओर कार्यकर्ताओं का ध्यान दिलायें। जोखिम के प्रत्येक लक्षण को चित्रों और दाहिनी ओर दिये गये बिन्दुओं की मदद से समझायें।

इस बात पर ज़ोर दें कि शुरूआत में ही खतरे के इन चिह्नों को पता कर लेने से ऐसे शिशुओं की पहचान करने में मदद मिलेगी जिन्हें तत्काल देखभाल व इलाज की आवश्यकता है। यदि इन 4 लक्षणों में से कोई भी लक्षण दिखे तो शिशु को तुरन्त अस्पताल भेजें।

**आप कैसे पता करेंगी कि नवजात शिशु बीमार है?**

नवजात शिशुओं में दिखाई देने वाले कुछ शुरूआती लक्षणों में गर्भनाल के पास लाली या सूजन और गर्भनाल में से पस या खून निकलने के साथ ही दुर्गन्ध आना है। यदि ऐसे लक्षण नहीं भी हों तो भी शिशु को गंभीर बीमारी हो सकती है। गर्भनाल ठीक भी दिख रही हो तब भी शिशु सुस्त और बीमार लग सकता है और शिशु के शरीर में संक्रमण प्रवेश करके तेज़ी से फैल सकता है। शुरूआत में ही खतरे के कुछ अन्य चिह्नों को देखने से ऐसे शिशुओं की पहचान करने में मदद मिलेगी जिन्हें तत्काल देखभाल व इलाज की आवश्यकता है।

**खतरे के चिह्न क्या हैं?**
खतरे के चिह्न बीमारी गंभीर होने की ओर इशारा करते हैं और ऐसा कई बीमारियों में हो सकता है। खतरे के इन चिह्नों की मौजूदगी के लिये प्रत्येक नवजात शिशु का आंकलन करना चाहिये:

**स्तनपान में कमी:** यदि नवजात शिशु शुरूआती कुछ दिनों तक ठीक से स्तनपान कर पा रहा हो, किन्तु फिर स्तनपान कम करने या अनिच्छा दिखाने लगे तो हो सकता है कि वह बीमार हो रहा हो। यह आवश्यक है कि ऐसे शिशुओं पर निरन्तर ध्यान दिया जाये और उन्हें इलाज के लिये अस्पताल रैफर किया जाये।

**गतिविधि में कमी:** यदि शिशु पहले सक्रिय था किन्तु अब ढीला, आधी नींद में, सुस्त लग रहा है और जगाने पर भी मुश्किल से उठ रहा है या ठीक से जग नहीं रहा है तो शिशु को गंभीर बीमारी हो सकती है। शिशु की गतिविधियों पर ध्यान दें; एक स्वस्थ शिशु जब जग रहा होगा तो सजग व सक्रिय रहेगा।

**छूने पर ठण्डा:** शिशु का तापमान जाँचें; शिशु के पाँव के तापमान को महसूस करें और देखें कि छूने पर क्या वह आपके तापमान से ठण्डा लग रहा है? यदि शिशु का पेट व पैर ठण्डे हैं तो हो सकता है कि वह बहुत बीमार हो।

**निमोनिया के चिह्न:** ध्यान दें कि शिशु साँस कैसे ले रहा है। बीमार शिशु बहुत तेज़–तेज़ साँस लेगा, साँसों के बीच अधिक ठहराव होगा या भारी साँसें लेगा। अगर शिशु की साँस लेने की दर 60/प्रति मिनट से अधिक है तो यह असमान्य है।

एक बीमार नवजात शिशु तेज़ी के साथ बहुत ज़्यादा बीमार हो सकता है और यदि समय रहते लक्षणों की पहचान नहीं हो या अस्पताल नहीं ले जाया जाये तो उसकी मृत्यु भी हो सकती है। यदि जोखिम के चारों लक्षणो में से कोई भी दिखे, तो नवजात शिशु को ऐसे नज़दीकी अस्पताल भेजें जहाँ इंजेक्शन व ड्रिप से एण्टीबायोटिक्स् देने की सुविधा हो।

सभी शिशुओं में गंभीर बीमारी के बढ़ने का ख़तरा रहता है, विशेषकर कमजोर नवजात में और उनमें इन चारों चिह्नों का लगातार आंकलन करना आवश्यक है।

# आप कैसे पता करेंगी कि नवजात शिशु बीमार है?

## आप बीमारी के बारे में कैसे पता लगायेंगी?

## जब संक्रमण फैलने लगता है तब क्या होता है?

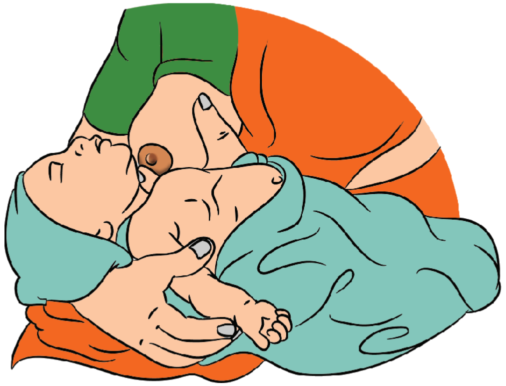

स्तनपान में कमी

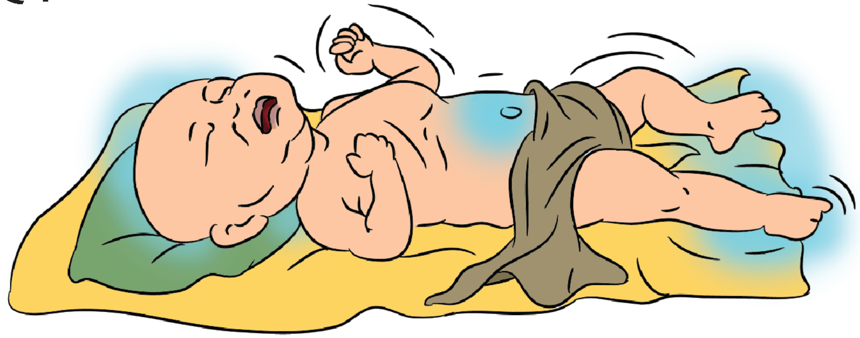

छूने पर ठण्डा लगना

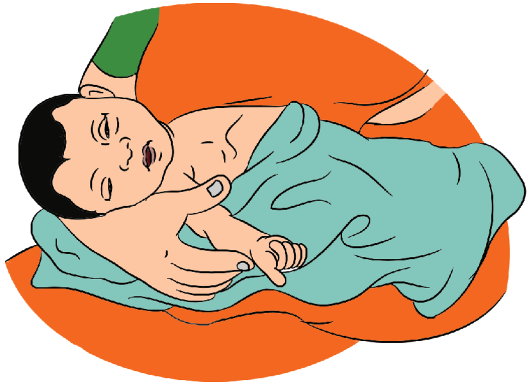

सक्रियता में कमी

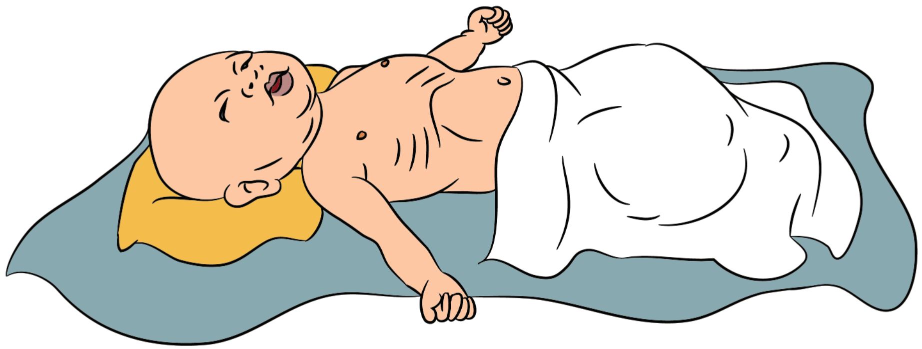

निमोनिया के चिह्न– तेज़–तेज़ साँस लेना, 60 श्वास प्रति मिनट से अधिक की दर से साँस लेना

# एक बीमार शिशु को मृत्यु से कैसे बचाया जा सकता है?

शिशु में जोखिम के चिह्न उसका जीवन ख़तरे में होने की स्थितियों की ओर इशारा करते हैं जो कि शिशु को तेज़ी से मृत्यु की ओर ले जा सकते हैं। ऐसे शिशुओं की समय रहते पहचान और तुरंत अस्पताल भेजने से उनकी जान बचाई जा सकती है।

कार्ड प्रदर्शित करें। कार्यकर्ताओं से एक–एक करके बिन्दुओं को पढ़ने के लिये कहें।

कार्यकर्ताओं को बतायें:

ऐसे अस्पतालों की पहचान करना बहुत आवश्यक है जहाँ इंजेक्शन व ड्रिप से एण्टीबायोटिक्स् देने की सुविधा उपलब्ध हो।

कार्यकर्ताओं को समझायें कि बीमार नवजात शिशु की हालत बहुत तेज़ी से बिगड़ सकती है इसलिये जितना जल्दी सम्भव हो इलाज शुरू करवाना बहुत महत्त्वपूर्ण है।

दाहिनी ओर दिये गये बिन्दुओं का उपयोग करके कार्यकर्ताओं को समझायें कि बीमार शिशु को कैसे बचाया जा सकता है।

यदि जोखिम के अभी बताये गये 4 में से कोई भी चिह्न दिखाई दें, तो शिशु को अस्पताल भेजना ज़रूरी है। अस्पताल रेफर करने से पहले–

- पहले से ही ऐसे अस्पतालों की पहचान कर लें जहाँ इंजेक्शन व ड्रिप से एण्टीबायोटिक्स् देने की सुविधा हो तथा जहाँ इंजेक्शन लगाने के लिये प्रशिक्षित लोग हों।
- इंजेक्शन व ड्रिप से एण्टीबायोटिक्स् देने की सुविधा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर भी उपलब्ध होती है।
- एण्टीबायोटिक्स् की पहली ख़ुराक देने के लिये आशा व ए.एन.एम. से तत्काल सम्पर्क करें।
- यदि आशा उपलब्ध है तो उन्हें चाहिये कि शिशु को अस्पताल भेजने से पहले एण्टीबायोटिक्स् की पहली ख़ुराक मुँह के ज़रिये दें।
- यदि ए.एन.एम. उपलब्ध है तो उन्हें चाहिये कि शिशु को अस्पताल भेजने से पहले एण्टीबायोटिक्स् की पहली ख़ुराक इंजेक्शन के ज़रिये दें।
- जोखिम के चिह्नों की पहचान के एक से दो घण्टे में यदि आशा व ए.एन.एम. पहली ख़ुराक देने के लिये उपलब्ध नहीं हो पायें तो शिशु को सीधे ही ऐसे अस्पताल ले जायें जहाँ इंजेक्शन व ड्रिप से एण्टीबायोटिक्स् देने की सुविधा उपलब्ध हो।
- वाहन का प्रबन्ध करें और माता को सलाह दें कि वे अस्पताल के रास्ते में शिशु को अपने से सटाकर, त्वचा–से–त्वचा के सम्पर्क में रखकर, गरम रखें।
- परिवार को इस बात के लिये तैयार करें कि यदि शिशु बिल्कुल भी दूध नहीं पी रहा है, तो उसे भर्ती कराना पड़ सकता है।

**उपचार:**

वर्तमान में बीमार नवजात शिशु का इलाज निम्नलिखित एण्टीबायोटिक्स् देकर किया जाता है:

- शिशु को मुँह से एमॉक्सिसिलीन देकर
- पेशियों में इंजेक्शन के ज़रिये जैण्टामाइसीन देकर

अधिकतर बीमार शिशुओं को इस उपचार से ठीक किया जा सकता है व बचाया जा सकता है।

# एक बीमार शिशु को मृत्यु से कैसे बचाया जा सकता है?

- ऐसे अस्पतालों की पहचान करना जहाँ इंजेक्शन व ड्रिप से एण्टीबायोटिक्स् दी जा सकती हो
- आशा/ए.एन.एम. से तुरन्त सम्पर्क करना
- शिशु को नज़दीकी अस्पताल रेफर करना
- यदि नवजात शिशु दूध बिल्कुल नहीं पी रहा है, और यदि आवश्यकता हो तो, उसे भर्ती करवाना

नवजात शिशु का इलाज किसके द्वारा और कहाँ–कहाँ सम्भव है?

- आशा– मुँह के ज़रिये एण्टीबायोटिक्स् की पहली खुराक दें
- प्रशिक्षित ए.एन.एम. इंजेक्शन से एण्टीबायोटिक्स् दें
- ऐसे प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में ले जाएं जहाँ इंजेक्शन व ड्रिप से एण्टीबायोटिक्स् दी जा सकती हों
- ऐसे अस्पताल में भर्ती करायें जहाँ इंजेक्शन व ड्रिप से एण्टीबायोटिक्स् देने की सुविधा उपलब्ध हो

# बीमार शिशु की पहचान के लिये आप क्या कर सकती हैं?

कार्ड प्रदर्शित करें।

कार्यकर्ताओं से पूछें कि क्या उन्हें समुदाय में कोई बीमार नवजात शिशु मिला है। चर्चा होने दें।

कार्यकर्ताओं से बिन्दुओं को एक–एक करके पढ़ने के लिये कहें और प्रत्येक बिन्दु को दाहिनी ओर दिये गये बिन्दुओं की सहायता से समझायें।

ज़ोर देकर बतायें:

माताओं और देखभाल करने वालों को यह सिखाना बहुत आवश्यक है कि वे जोखिम के चिह्नों की पहचान कैसे करें और जब इनमें से कोई भी चिह्न दिखे तब वे क्या करें।

- नियमित गृह भ्रमण बीमार शिशु की पहचान करने में पर्याप्त नहीं होंगे। गृह भ्रमण के समय माता से बात करें और पूछें कि क्या उन्होंने शिशु के बारे में कुछ ऐसा देखा है जो कि उन्हें चिन्तित कर रहा हो।
- नवजात शिशु बहुत कोमल होता है और आसानी से बीमार पड़ सकता है। सभी नवजात शिशुओं में बीमारियाँ तेज़ी से बिगड़ सकती हैं और कमज़ोर नवजात शिशुओं में ऐसा होने की आशंका अधिक होती है।
- माता को अपने शिशु में जोखिम के चिह्नों को पहचानने और उनका आंकलन करने के लिये प्रशिक्षित करें क्योंकि अक्सर वही पहली व्यक्ति होंगी जिनका ध्यान शिशु की स्थिति में परिवर्तन पर जायेगा।
- शिशु के जन्म के पहले दिन गृह भ्रमण में शिशु के परीक्षण के समय माता और देखभाल करने वालों को शिशु का अवलोकन करने से सम्बन्धित मुख्य बातें बतायें और उन्हें नियमित रूप से नवजात शिशु का आंकलन करने के लिये कहें।
- माता और देखभाल करने वालों को सलाह दें कि यदि उन्हें शिशु के स्वास्थ्य को लेकर कोई भी चिन्ता हो या जोखिम के चार में से कोई भी चिह्न दिखें तो वे तुरन्त आँगनवाड़ी कार्यकर्त्ता, ए.एन.एम. या आशा को सूचित करें।
- यदि आँगनवाड़ी कार्यकर्त्ता, ए.एन.एम. या आशा उपलब्ध नहीं हों तो शिशु को बिना देर किये नज़दीकी अस्पताल ले जायें।

# बीमार शिशु की पहचान के लिये आप क्या कर सकती हैं?

- शिशु घर पर बीमार पड़ सकता है और बीमारी बहुत तेज़ी से बिगड़ सकती है

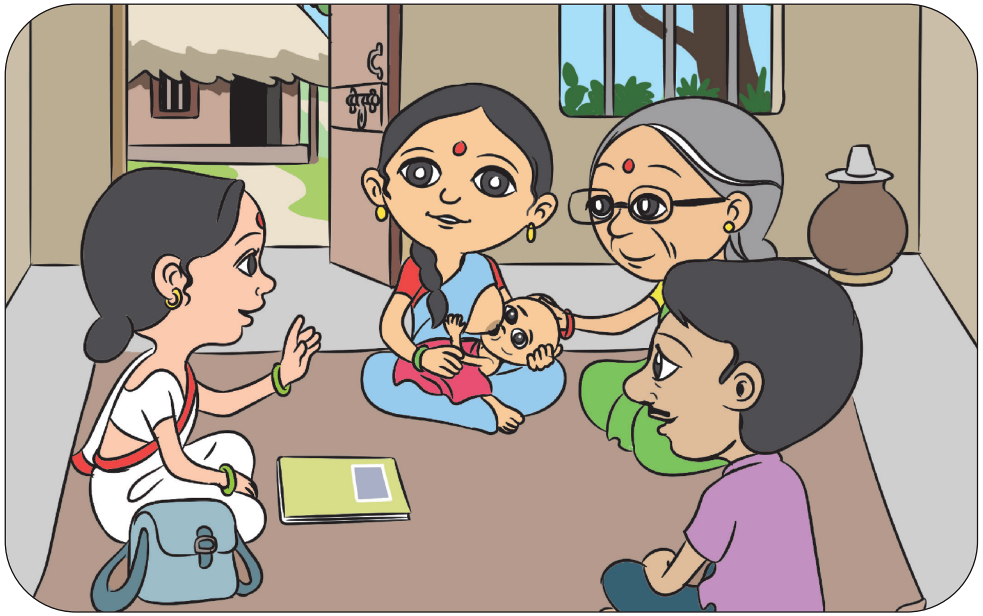

शिशु के जन्म के पहले ही दिन परिवार को जोखिम के चिह्नों और उपचार के उपायों के बारे में शिक्षित करें

केवल नियमित गृह भ्रमण करना पर्याप्त नहीं होंगे। दौरे के समय परिवार से बीमारी के चिन्हों के बारे में पूछें

# साराँश

कार्ड प्रदर्शित करें और सभी बिन्दुओं को संक्षेप में प्रस्तुत करें।

कार्यकर्ताओं से सभी बिन्दुओं को एक–एक करके पढ़ने के लिये कहें, उनसे पूछें कि क्या उन्होंने इन बिन्दुओं को अच्छी तरह समझ लिया है, तथा जहाँ आवश्यकता हो वहाँ उन्हें समझाने के लिये पिछली स्लाइडों में से सामग्री का उपयोग करें।

# साराँश

- नवजात शिशुओं की संक्रमणों की चपेट में आने की आशंका बहुत अधिक होती है तथा वे जन्म के समय और जीवन के पहले माह में आसानी से संक्रमणों से ग्रस्त हो सकते हैं।
- नवजात शिशुओं को केवल स्तनपान और गरमाहट सुनिश्चित करके संक्रमणों से सुरक्षा दी जा सकती है।
- संक्रमणों से बचाव के आसान तरीकों में गर्भनाल पर कुछ भी नहीं लगाना तथा शिशु से सम्बन्धित कामों से पहले अपने हाथों को धोना हैं।
- कमज़ोर नवजात शिशु पर अतिरिक्त ध्यान देकर उसकी देखभाल घर पर की जा सकती है किन्तु बीमार नवजात शिशु को अस्पताल ले जाना आवश्यक है।

यदि इनमें से कोई भी लक्षण दिखे, तो शिशु को ऐसे अस्पताल ले जायें जहाँ इंजेक्शन व ड्रिप से एण्टीबायोटिक्स् देने की सुविधा हो:

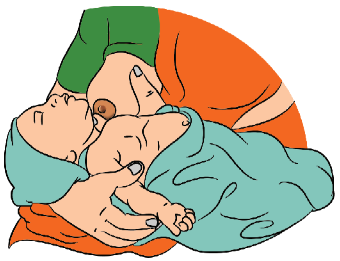

स्तनपान में कमी

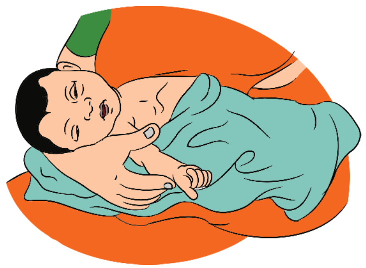

गतिविधियों की कमी

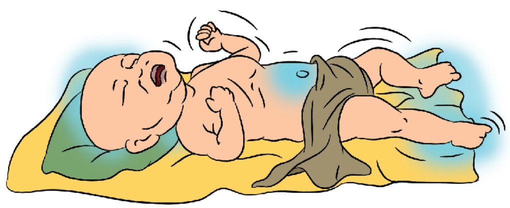

छूने पर ठण्डा लगना

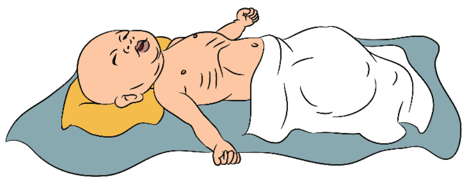

निमोनिया के चिह्न – साँस तेज़–तेज़ चलना, साँस लेने की दर 60 साँसें प्रति मिनट से अधिक होना।

- माता एवं देखभाल करने वालों को सिखायें कि जोखिम के चिह्नों को कैसे पहचानें और उस स्थिति में किससे सम्पर्क करें।
- घर के दौरे के दौरान माँ व परिवार वालों से बीमारी के चिन्हों के बारे में पूछें।

# कार्यबिन्दु

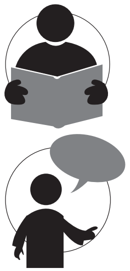

कार्ड प्रदर्शित करें।

कार्यकर्ताओं से सभी बिन्दुओं को एक–एक करके पढ़ने के लिये कहें।

कार्यकर्ताओं को जो कुछ भी अस्पष्ट हो उसे समझाने के लिये पिछली स्लाइडों का इस्तेमाल करें।

# कार्यबिन्दु

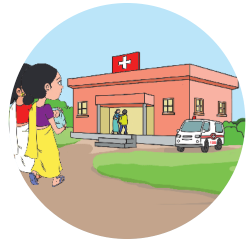

- शिशु के जन्म के बाद पहले दिन गृह भ्रमण में माता और देखभाल करने वालों को सिखायें कि वे शिशु में जोखिम के चिह्नों को कैसे पहचानें और इनमें से कोई भी चिह्न दिखाई देने पर किनसे सम्पर्क करें।
- यदि पहले दिन सम्भव नहीं हो, तो जितना जल्दी सम्भव हो गृह भ्रमण करके माता और देखभाल करने वालों को शिशु में जोखिम के चिह्नों को पहचानना सिखायें।
- अपने क्षेत्र में ऐसे अस्पतालों की पहचान कर लें जहाँ उपचार के लिये इंजेक्शन व ड्रिप से एण्टीबायोटिक्स् देने की सुविधा हो।

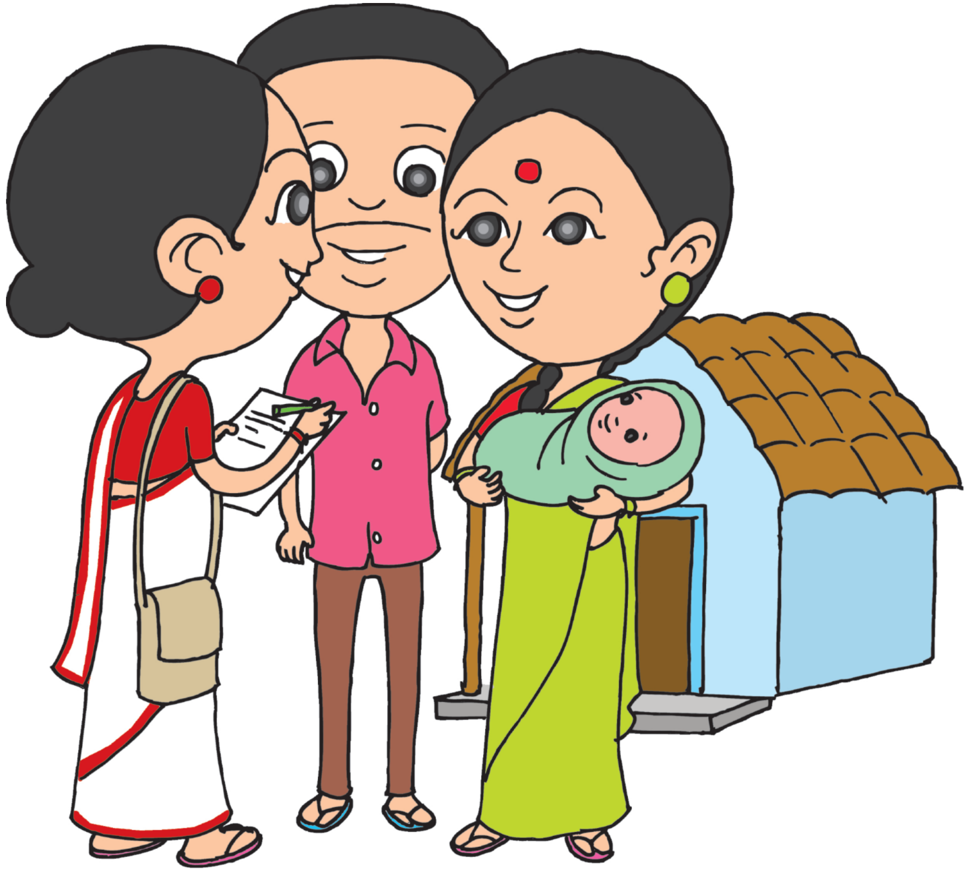

1 यह मासिक बैठक क्यों?
2 गृह भेंट योजना पंजी कैसे बनाएं या अपडेट करें, गृह भेंट की शुरूआत
3 आंगनवाड़ी केन्द्र पर आयोजित समुदायिक कार्यक्रम की योजना एवं आयोजन
4 नवजात शिशुओं में स्तनपान का अवलोकन - क्यों और कैसे?
5 कमज़ोर नवजात शिशु की पहचान और देखभाल
6 ऊपरी आहार - भोजन में विविधता
7 महिलाओं में एनीमिया की रोकथाम
8 शिशुओं में शारीरिक वृद्धि का आकलन
9 समय के साथ ऊपरी आहार में सुधार और वृद्धि
10 केवल स्तनपान सुनिश्चित करना
11 कमजोर नवजात शिशु की देखभाल - आखिर कितने कमजोर बच्चे हम से छूटे रहे हैं?
12 हम ऊपरी आहार की शुरूआत समय से कैसे सुनिश्चित करें?
13 गंभीर दुबलेपन को कैसे पहचाने एवं रोकें?
14 बीमारी के दौरान शिशु का आहार
15 स्तनपान संबंधित समस्याओं में माता को सहयोग
16 कंगारू मदर केयर की मदद से कमज़ोर शिशु की देखभाल कैसे करें?
**17 बीमार नवजात शिशु की पहचान एवं रेफरल सेवा**
18 कुपोषण और मृत्यु से बचने के लिए बीमारियों से बचाव
19 बच्चों और किशोरियों में खून की कमी/एनीमिया की रोकथाम
20 प्रसव पूर्व तैयारी - अस्पताल और घर पर होने वाले प्रसव के लिए
21 गर्भावस्था के दौरान तैयारी - नवजात शिशु की देखभाल और परिवार नियोजन